आज़ादी का अमृत महोत्सव

NATIONAL SCHOOL OF DRAMA
Final Year Students Present

Ministry of Culture
Government of India
सत्यमेव जयते

पार्टी
Party

Playwright
Mahesh Elkunchwar

Design & Direction
Aniruddha Khutwad

at Abhimanch
NSD Campus

1, 2, 3 & 4 June, 2023
7.00 PM

Additional Shows
3 & 4 June, 2023
3.30 PM

मालवी लोकभजन, गणेशस्तुति, ताल सतवा

तमे तो गवेरा का पूत गणेश
तम विना घडी न सदे ॥
तमे तो वेगा-वेगा आवो गणेश
तम विना घडी न सदे ॥
तमे तो ग्यान भंडारा गणेश
तम विना घडी न सदे ॥
तमारा सीस मोटेरा गणेश
तेले सिंदूर चढे ॥
तमारा दाते मोटेरा गणेश
सुवागण चुडेला पेरे ॥
तमारी सूंडे मोटेरी गणेश
वासग नाग रमे ॥
तमारी दूंदे मोटेरी गणेश
सवामण मुदक चढे ॥

NATIONAL SCHOOL OF DRAMA
Final Year Students Present

पार्टी

Playwright
Mahesh Elkunchwar

Party

Design & Direction
Aniruddha Khutwad

Costume Design
Paski

Costume Design Guidance
Nalini R Joshi

Set Design
Shekhar Kanwat

Set Design Guidance
Aniruddha Khutwad

Sound Design
Shruti V

Sound Design Guidance
Sourav Poddar

Light Design
Sarthak Narula

Poster & Brochure Design
Vishala R Mahale

Assistant in Direction
Rajnish Kumar

Associate in Direction
Sourav Poddar

The Playwright

Mahesh Elkunchwar

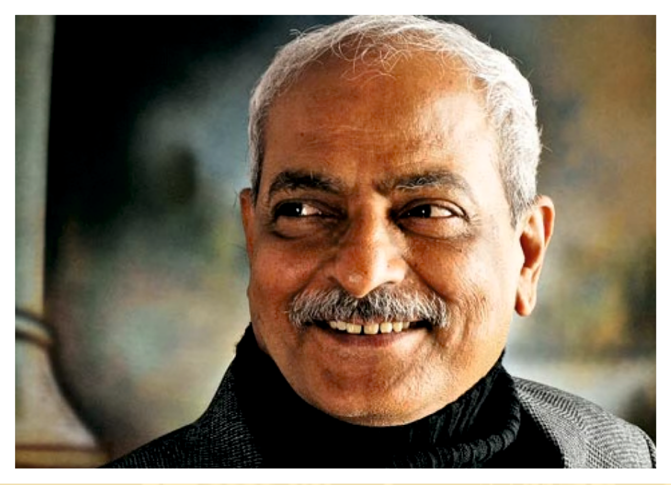

Mahesh Elkunchwar is an Indian veteran playwright with more than 20 plays to his name in addition to the theatrical writings and critical works. Over the years, he has written some of the most influential and progressive plays that include 'Holi', 'Raktapushpa', 'Party', 'Wada Chirebandi', 'Yugant', 'Atmakatha', 'Eka Natacha Mrutyu' etc. His work contributed a lot in shaping modern Indian theatre, and have wide-ranging themes from morality, identity, sexuality, religious tension, gender issues, human bond and alienation. Elkunchwar is the recipient of a number of prestigious awards, including Sararaswati Samman (2002), The Sahitya Akademi Award (2002), The Sangeet Natak Akademi Award (1989).

नाटककार

महेश एलकुंचवार

महेश एलकुंचवार देश के जाने माने नाटककार हैं। नाट्य लेखन और आलोचनात्मक कार्यों के अलावा आपने 20 से अधिक नाटक लिखे हैं। आधुनिक भारतीय रंगमंच को आकार देने में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। आपके प्रसिद्ध नाटकों में 'होली', 'रक्तपुष्प', 'पार्टी', 'युगांत', 'वाडा चिरेबंदी', 'एका नटाचा मृत्यु', 'आत्मकथा' आदि प्रमुख हैं। आपके नाटकों में नैतिकता, पहचान, धार्मिक तनाव, लैंगिकता सम्बन्धी मुद्दे, मानवीय सम्बन्ध और अलगाव जैसे विषय आये हैं। महेश एलकुंचवार को कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है – जिनमें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, (1989) साहित्य अकादमी पुरस्कार (2002), सरस्वती सम्मान (2002) शामिल हैं।

Design & Direction

Aniruddha Khutwad

An alumnus of the National School of Drama (1994), Aniruddha Khutwad has directed plays in Marathi, Hindi and other languages with various theatre institutions and theatre groups from across India. Some of his major directorial ventures include 'Raktapushpa','Mahapoor', 'Raisin in the Sun', 'Virasat', 'Adhantar', 'Sainya Bhaye Kotwal', and 'Lower Depths' in Hindi for the National School of Drama; 'Benda Kaalu On Toast' in Kannada for Ninasam; 'Virasat' in Hindi for Madhya Pradesh School of Drama, Bhopal; 'Mahapoor' and 'Mister Beharam' in Marathi for Kalakendra, Pune; 'Juliet aur uska Romeo' in Hindi for Drama School, Mumbai; 'The Good Doctor' in English for Theatre Arts, Central University, Hyderabad; 'Ilhaam', 'The Park', 'Adhantar', 'Raktapushpa', 'Meeta Ki Kahani', and 'Tax Free' in Hindi for FTII, Pune; 'Tu Veda Kumbhar' and 'Talghar' in Marathi for Lalit Kala Kendra, Pune University; 'Doctor Aap Bhi' in Hindi for Shriram Centre, New Delhi; 'Kaay Danger Wara Sutlay' for Maharashtra Rangabhoomi, Mumbai and 'Andher Nagari Chaupat Raja' in Leh, Laddakh. Many of his plays are well received at Bharat Rang Mahotsav and other theatre festivals across India.

His plays 'Ek Rikami Baaju' has received seven 'ZEE Gaurav Awards' including Best Experimental Play & Best Direction in 2009. He has also received Prayogkarmi Purarskar in 2011 and Vinod Doshi Theatre Fellowship Award in 2012 for his contribution in Experimental Theatre activity. Aniruddha Khutwad received prestigious Manohar Singh Smriti award 2011 from National School of Drama for contribution in play direction.

Presently, he is working as a visiting faculty at National School of Drama, New Delhi, Film & Television Institute of India, Pune and at Theatre Departments of various Universities in India.

परिकल्पना एवं निर्देशन

अनिरुध्द खुटवड

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक (1994) अनिरुध्द खुटवड ने देश भर की विभिन्न संस्थाओं के लिए हिन्दी, मराठी और कई अन्य भाषाओं में नाटक निर्देशित किए हैं। आपके द्वारा निर्देशित प्रमुख नाटकों में रानावि के लिए हिन्दी में 'रक्तपुष्प', 'महापूर','ए रेज़िन इन दि सन', 'विरासत', 'अधांतर', 'सैयाँ भये कोतवाल', एवं 'लोअर डैप्थ्स'; नीनासं, हेग्गोडु के लिए कन्नड में 'बेंद काळु ऑन टोस्ट'; मध्य प्रदेश नाट्य विद्यालय, भोपाल के लिए हिन्दी में 'विरासत'; कलाकेन्द्र, पुणे के लिए मराठी में 'महापूर' एवं 'मिस्टर बेहराम'; ड्रामा स्कूल, मुंबई के लिए हिन्दी में 'जूलियट और उसका रोमियो'; केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद के थिएटर आर्ट्स विभाग के लिए अँग्रेजी में 'दि गुड डॉक्टर'; राष्ट्रीय फ़िल्म व टेलीविज़न संस्थान, पुणे के लिए हिन्दी में 'इल्हाम', 'दि पार्क', 'अधांतर', 'रक्तपुष्प','मीता की कहानी', एवं 'टैक्स फ्री'; पुणे विश्वविद्यालय के ललित कला केन्द्र के लिए मराठी में 'तू वेडा कुम्भार', एवं 'तलघर'; श्रीराम सेंटर, नई दिल्ली के लिए हिन्दी में 'डॉक्टर आप भी'; महाराष्ट्र रंगभूमि, मुंबई के लिए मराठी में 'काय डेंजर वारा सुटलाय' तथा लेह–लद्दाख में 'अँधेर नगरी चौपट राजा' आदि नाटक शामिल हैं।

आपके कई नाटक भारत रंग महोत्सव सहित देश के अन्य नाट्य उत्सवों में शामिल व प्रशंसित हुए हैं।

आपके नाटक 'एक रिकामी बाजू' को 2009 में सात 'ज़ी गौरव पुरस्कार' प्राप्त हुए हैं। आप को 2011 में प्रयोगधर्मी नाटकों में योगदान के लिए प्रयोगकर्मी पुरस्कार व 2012 में विनोद दोशी फ़ैलोशिप प्रदान की गई । निर्देशन के क्षेत्र में योगदान हेतु रानावि ने अनिरुध्द खुटवड को प्रतिष्ठित मनोहर सिंह स्मृति सम्मान से नवाज़ा है।

वर्तमान में आप स्वतंत्र रंगकर्म के साथ–साथ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली, राष्ट्रीय फ़िल्म व टेलीविज़न संस्थान, पुणे और देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अतिथि संकाय हैं।

About The Play

In Party, Mahesh Elkunchwar takes a look at the members of the creative set in an Indian metropolis, with their pretensions, rivalries, aspirations, and frustrations.
The party is hosted by Damyanti Rane, a rich middle-aged widow and well-known patron of the arts in the city, in honour of Diwakar Barve, a celebrated playwright, who has just been awarded the prestigious National Award. All the cognoscenti of the urban milieu make a beeline to the event. Mohini- an actress, paramour of Barve, who has quit acting for Barve, Sona- Damayanti's daughter, who has chosen to be a single mother after her devastating heart-break with Sahni, Agashe- a commercially successful Playwright, glamour boy of Marathi theatre, Bharat- an upcoming young playwright from a backword village, who wants to follow in Barve's footsteps, Vrinda- a theatre critic, a doctor- Damayanti's friend, an observer by nature, Malavika- a socialite, Narendra- Malavika's husband, a cloth merchant, Jogdand- a journalist, are at the Party, where their pretensions and hypocrisies are challenged, countered, juxtaposed against their true beings.
Missing is Amrit, the hero-in-absentia. Amrit, an immensely talented and promising writer-poet who left the politics of the party circuit and literary societies to live and work with the marginalized tribal villagers, who were being denuded progressively of their human rights by the capitalist land-grabbers. His attempt to bridge the chasm between words and deeds haunts those at the party.

नाटक के बारे में

नाटककार महेश एलकुंचवार ने पार्टी नाटक में, एक भारतीय महानगर के कलाक्षेत्र के जाने–माने रचनात्मक सदस्यों को उनके ढोंग, प्रतिद्वंद्विता, आकाँक्षाओं और कुंठाओं के साथ दिखाया हैं।
पार्टी की मेज़बानी मध्यम आयु वर्ग की एक अमीर विधवा और शहर की प्रसिद्ध कला पोषक, दमयंती राणे, दिवाकर बर्वे के सम्मान में कर रही हैं, जो एक प्रसिद्ध नाटककार हैं, जिन्हें अभी–अभी प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। शहरी परिवेश के प्रमुख बुद्धिजीवी इस में शामिल होते हैं। मोहिनी– एक अभिनेत्री, बर्वे की प्रेमिका, जिसने बर्वे की ख़ातिर अभिनय छोड़ दिया है, सोना– दमयंती की बेटी, जिसने साहनी की वजह से दिल टूटने के बाद कुँआरी माँ बनने का निर्णय किया है, आगाशे– एक व्यावसायिक रूप से सफल नाटककार, मराठी थिएटर का ग्लैमर बॉय, पिछड़े गाँव से आने वाला का एक उभरता हुआ युवा नाटककार, भारत जो बर्वे के नक़्शेक़दम पर चलना चाहता है, वृंदा– एक रंगमंच समीक्षक, एक डॉक्टर– दमयंती का दोस्त, स्वभाव से एक पर्यवेक्षक, मालविका– एक सोशलाइट, नरेंद्र– मालविका का पति, एक कपड़ा व्यापारी, जोगदंड– एक पत्रकार, पार्टी में मौजूद हैं। जहाँ उनके ढोंग और पाखण्ड उजागर होते हैं, उनके सामजिक मुखौटों की उनके वास्तविक अस्तित्व से तुलना की जाती है।
जो नाटक में मौजूद नहीं है, वो है अमृत। एक अनुपस्थित नायक, अमृत, बेहद प्रतिभाशाली और होनहार लेखक–कवि, जो पार्टी बैठकों और साहित्यिक समाजों की राजनीति को छोड़कर हाशिए पर रहने वाले आदिवासी लोगों के साथ रहने और काम करने चला गया है। ज़मीन हड़पने वाले पूँजीवादियों द्वारा उन ग्रामीण आदिवासियों को मानवाधिकारों से उत्तरोत्तर वंचित किया जा रहा है। कथनी और करनी के बीच की खाई को मिटाने की अमृत की यह कोशिश पार्टी में आये लोगों को झकझोरती है।

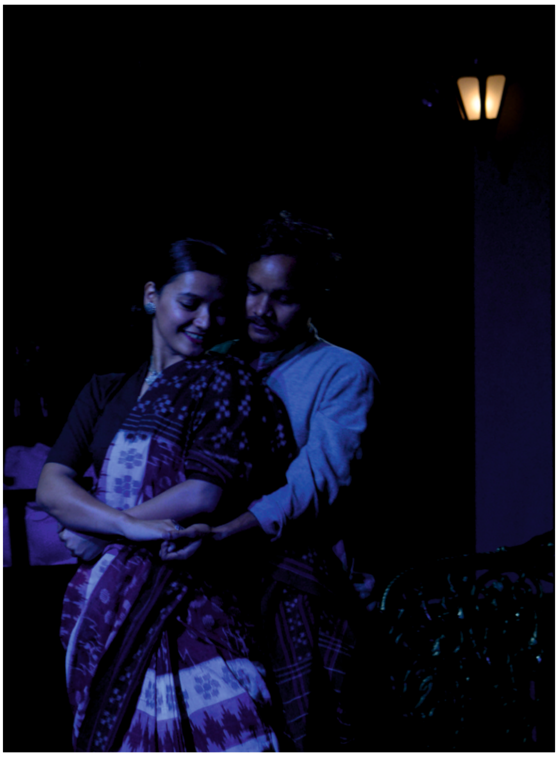

Directorial Note

I am thankful to the National School of Drama for inviting me to do a realistic play with NSD third-year students. It is the sixth time, I had the chance to direct a realistic play at the school, and this time, I was given an opportunity to direct an Indian realistic play. With this in mind, I selected Mahesh Elkunchwar's play 'Party' from a list of realistic works. The play's plot includes practically real-time events that take place in a single night in addition to being realistic. It will be a new challenge for me to confront realism with real-time events because I have never directed a play of this sort.

Despite the fact that the play was created in 1974, set in 70's, the situations are still relevant in 2023. The social and political issues and circumstances are reflected in the current events we are seeing. There are commercially successful artists, experimental artists, and a select few seasoned established artists in the play. Even today, in Marathi theatre, there is disagreement over which plays are superior: whether the experimental plays, or those that are financially successful ones, or content-oriented. Being a member of the community, I view the competition for the title of the best as a myth.

The play is an intelligent satire aimed at the urban elite — especially those poseurs with artistic inclinations, namely establishment artists and their patrons, the capitalists, with the idea of controlling all the types of art forms and artists by their patronage. It depicts their apathy towards society at large while they get away, by the way of small talk and prosaic conversations at parties.

As a form, the play's nature and real-time requirements must be addressed with an improvised element that involves entering a scenario and staying in it until its conclusion. In order to survive in this situation and maintain their values, every character in the drama must grapple with existential dilemmas. This metaphoric allegoric quality serves as a mirror for those of us thriving to survive in our society.

Amrit, though not present in person, shows himself again and again in their conversations reminding them and viewers of their banality, deceit, and their utter callousness towards the inequities in society at large, which brings them at cross-purposes to the true aim of all art and artistic endeavors: the ennoblement of humanity. It is the reason due to which performing the play in today's era and context is a challenge for me.

I thank Prof. Ramesh Chandra Gour, Director NSD, Shri. Santanu Bose, Dean Academics, NSD for inviting me to direct a play with the third-year students.

I thank Shri. Parag Sarmah, Production Manager, NSD for cooperating in the entire production process.

I want to thank all the staff of all the departments of NSD for their enduring co-operation.

I would like to thank, senior artists Asif Ali for his heart-touching rendition of the poetry, 'Jeevananubhav' and Pt. Sameer Dublay for wonderfully singing the Malwa folk song 'Tame Toh Gavera Ke Poot Ganesh'.

I've been collaborating with the team of professionals for the past eight years, including Associate Director Sourav Poddar, Costume Designer Nalini R Joshi, Lighting Designer Sarthak Narula, and Poster & Brochure Designer Vishala R Mahale. I want to thank everyone for their ongoing assistance, inventiveness, and cooperation.

I experienced great joy while preparing this performance with the third-year acting and design students, who were part of the process and have worked relentlessly in making this production. Hence I thank all of them and offer my best wishes for the performance.

Aniruddha Khutwad, (Play Director)

निर्देशकीय

मैं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे तृतीय वर्ष के छात्रों के साथ एक यथार्थवादी नाटक का निर्देशन करने के लिए आमंत्रित किया है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में यथार्थवादी नाटक निर्देशित करने का ये मेरा छठा अनुभव है, इस बार मुझे भारतीय यथार्थवाद पर आधारित नाटक करने का मौक़ा मिला है। इसी सोच के साथ मैंने यथार्थ नाटकों की शृंखला में से महेश एलकुंचवार जी के, नाटक 'पार्टी' को चुना। यथार्थवादी होने के साथ–साथ इस नाटक का कथानक वास्तव में एक रात में घट रही घटनाओं पर आधारित है। ये मेरे लिए एक नयी चुनौती जैसा है, जिसमें पूरा नाटक एक रात में घट रही घटनाओं पर हैं। इस तरह के विशिष्ट कालावधि में घटित यथार्थ नाटक का निर्देशन करने का अवसर मुझे पहली बार मिल रहा है।

बावजूद इसके कि ये नाटक 1974 में लिखा हुआ है, नाटक में रचा गया समय सत्तर के दशक का है, लेकिन नाटक की प्रासंगिकता, आज भी यानि सन 2023 में भी बरकरार है ऐसा मुझे लगता है। नाटक में स्थित परिस्थितियाँ, हमारे आज के सामजिक एवं राजनैतिक हालात को प्रतिबिंबित करती हैं।

इस नाटक में जो किरदार दिखाए गए हैं, उन में से कोई किरदार, व्यावसायिक रूप से सफल कलाकार है, तो कोई प्रयोगात्मक कलाकार तथा प्रस्थापित अनुभवी कलाकार भी दिखाए गए हैं। अभी भी मराठी रंगमंच में, 'किस तरह का नाटक सर्वश्रेष्ठ है?' ये बहस का मुद्दा बनाया जाता रहा है: प्रयोगात्मक नाटक, से सफल नाटक या फिर, विचारशील परिपक्वता पूर्ण नाटक। इसी समुदाय के हिस्से के रूप में, जब मैं इस स्पर्धात्मक होड़ को देखता हूँ, तो महसूस करता हूँ कि यह सब मिथ्या है।

यह नाटक शहरी अभिजात्य वर्ग– विशेष रूप से कलात्मक एवं अभिरुचि संपन्न, प्रस्थापित कलाकार और उनके पोषकों पर आधारित एक सटीक व्यंग्य है। समाज के प्रति उनकी उदासीनता को यह बड़े पैमाने पर दर्शाता है, जबकि वे पार्टियों में हो रही सतही चर्चाओं से ही संतुष्ट हो कर, बातचीत के माध्यम से असली मुद्दों से दूर हो जाते हैं।

नाटक के रूप में, नाटक की प्रकृति और वास्तविक समय की आवश्यकताओं को एक तात्कालिक तत्व के साथ संबोधित किया जाना चाहिए, जिसमें एक परिदृश्य में प्रवेश करना और उसके समापन तक उसमें रहना शामिल है। इस परिस्थिति में जीवित रहने और अपने जीवन मूल्यों को बनाए रखने के लिए, नाटक के प्रत्येक पात्र को अस्तित्व सम्बन्धी दुविधाओं से जूझना पड़ता है। यह रूपकात्मक दृष्टांत, हममें से उन लोगों के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करता है जो हमारे समाज में जीवित रहने के लिए प्रयासरत हैं।

अमृत, हालाँकि व्यक्तिगत रूप से नाटक में मौजूद नहीं है, लेकिन पार्टी में मौजूद लोगों की बातचीत में हो रहे ज़िक्र के ज़रिये बार–बार दर्शकों से रूबरू होता है। पार्टी में शामिल समाज के प्रतिनिधियों की तुच्छता, छल, कपट और समाज में स्थित असमानताओं के प्रति उनकी घोर उदासीनता की याद दिलाता है, जो सभी कला, कलात्मक प्रयास और उसके संभवतः उद्देश्य– मानवता के उत्थान पर सवाल उठाता है। यही वजह है कि, इस नाटक को आज के दौर में खेलना मेरे लिये बतौर निर्देशक बड़ी चुनौती लगती है!

मैं, प्रोफ़ेसर रमेश चंद्र गौड़, निदेशक रानावि, तथा श्री शांतनु बोस, संकायाध्यक्ष, रानावि, को धन्यवाद देता हूँ, कि उन्होंने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के तृतीय वर्ष के छात्रों के साथ एक नाटक का निर्देशन करने के लिए मुझे आमंत्रित किया । श्री पराग सर्माह, प्रस्तुति प्रबंधक, रानावि, का आभारी हूँ कि उन्होंने पूरी प्रस्तुति–प्रक्रिया में महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

मैं रानावि के सभी विभागों को उनके निरंतर सहकार और प्रस्तुति में लगन से काम करने के लिए आभार व्यक्त करना चाहता हूँ।

मैं, विशेष रूप से, वरिष्ठ कलाकार, आसिफ अली को कविता 'जीवनानुभव' के भावपूर्ण पाठ के लिए और पंडित समीर दुबले को मालवी लोकगीत 'तमे तो गवेरा के पूत गणेश' गाने के लिये, मैं धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

मैं पिछले आठ वर्षों से जिन रंगकर्मी विशेषज्ञों के दल के साथ कार्य कर रहा हूँ, उनमें से इस वर्ष भी कुछ मेरे साथ जुड़े हुए हैं, इनमें सह निर्देशक सौरभ पोद्दार, वेशभूषा अभिकल्पक नलिनी आर. जोशी, प्रकाश परिकल्पक सार्थक नरूला और पोस्टर एवं ब्रोशर अभिकल्पक विशाला आर महाले शामिल हैं। मैं इन सभी को उनकी निरंतर सहायता एवं रचनात्मक सहयोग के लिए अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

तीसरे वर्ष के अभिनय और परिकल्पना के छात्र, जो इस प्रक्रिया में सक्रिय रूप से मेरे साथ सहभागी रहे, उनके साथ यह नाट्य प्रस्तुति को तैयार करते हुए मुझे अपार आनंद का अनुभव हुआ। इसलिए मैं उन सभी विद्यार्थिओं को धन्यवाद देता हूँ और नाट्य प्रस्तुति करने के लिए उन्हें शुभकामनाएँ देता हूँ।

अनिरुद्ध खुटवड, (नाट्य निर्देशक)

Costumes Design Guidance

Nalini R Joshi

After completing her graduation in English literature from Delhi University, Nalini Raghunathan Joshi did an advanced diploma in Fashion design and then a post-graduate diploma with specialization in acting from the National School of Drama in 1999. A multitalented Actor, Costume designer, director, and teacher, she has acted in more than 30 plays under different directors. She has designed costumes for numerous plays like 'Gappu Gop Gopanggamdas', 'Chanakya Vishnugupt', 'Andha Yug', 'Teen Meheriyan', 'Familiar Stranger', 'Aurangzeb', 'Tamasha na Hua', 'Badshah Rangeela', 'Uncle Vanya', 'Othello' etc. under different directors such as Ram Gopal Bajaj, Bansi Kaul, Bhanu Bharti, Sanjay Upadhyay, KS Rajendran, MK Raina, Tripurari Sharma, Mohan Maharishi, etc. at NSD, NSD Repertory Company, and many other institutions and groups. She also designs costumes for Television and films. As a festival coordinator, she has coordinated various theatre festivals like Bharat Rang Mahotsav, Jashn-e- Bachpan, Bal Sangam, etc. She has directed plays in several schools and workshops organized by reputed institutes. Nalini teaches at different institutions as visiting faculty for costume designing including National School of Drama. She has been awarded the Sangeet Natak Akademi 'Bismillah Khan Yuva Puraskar' for Costume Designing.

वेशभूषा परिकल्पना मार्गदर्शन

नलिनी आर जोशी

नलिनी रघुनाथन् जोशी ने दिल्ली विश्वविद्यालय से अँग्रेज़ी साहित्य में स्नातक उपाधि प्राप्त करने के बाद फ़ैशन डिज़ाइनिंग में एडवांस डिप्लोमा एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से अभिनय में विशेषज्ञता प्राप्त कर स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया है। एक बहुप्रतिभाशाली अभिनेत्री, वेशभूषा परिकल्पक, निर्देशक और शिक्षक के रूप में नलिनी ने अब तक विभिन्न निर्देशकों के साथ 30 से अधिक नाटकों में अभिनय किया है। आपने राम गोपाल बजाज, बंसी कौल, भानु भारती, संजय उपाध्याय, के.एस. राजेंद्रन, एम.के. रैना, त्रिपुरारी शर्मा, मोहन महर्षि जैसे महत्वपूर्ण निर्देशकों के साथ रानावि, रानावि रंगमंडल और कई अन्य संस्थानों, रंग समूहों, के साथ 'गप्पू गोप गोपंगमदास', 'चाणक्य विष्णुगुप्त', 'अंधायुग', 'तीन मेहरियाँ', 'फ़ैमिलियर स्ट्रेंजर', 'औरंगज़ेब', 'तमाशा न हुआ', 'बादशाह रंगीला', 'अंकल वान्या', 'ऑथेलो' आदि नाटकों के अतिरिक्त टेलीविज़न और फ़िल्मों के लिए भी वेशभूषा परिकल्पना की है। एक महोत्सव समन्वयक के रूप में आपने विभिन्न रंग महोत्सव जैसे कि भारत रंग महोत्सव, जश्ने – बचपन, बाल संगम आदि का समन्वयन किया है। उन्होंने कई विद्यालयों और प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में नाटकों का निर्देशन किया है। नलिनी राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय एवं देश के विभिन्न संस्थानों में वेशभूषा विषय की अतिथि संकाय रही हैं। आपको वेशभूषा परिकल्पना के लिए संगीत नाटक अकादेमी के 'बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है।

Associate Direction

Sourav Poddar

Sourav Poddar is an alumnus of National School of Drama, New Delhi, with Direction & Design in the year 2014. His area of interest is in browsing the relationship between technologies, cultural and media practices in performance, visual culture & cyberspace. Keenly exploring the use of science and theory to support practical tools for contextualising theatre practice and engaging the actor's process. Sourav has been extensively working with renowned artists around the country. He has been associated with Aniruddha Khutwad in plays like 'A Raisin in the Sun' (2018), 'Mahapoor/ Raktapushpa' (2019), 'Lower Depths' (2015) as an associate director.

सह निर्देशन

सौरभ पोद्दार

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के स्नातक सौरभ पोद्दार ने वर्ष 2014 में रंगमंच तकनीक और परिकल्पना में विशेषज्ञता हासिल की। उनकी अभिरुचि – प्रौद्योगिकियों, मीडिया प्रथाओं, साइबरस्पेस व प्रदर्शन, दृश्य संस्कृति के बीच सम्बन्धों को खोजने में है। आप नाटकीय अभ्यास के प्रासंगीकरण और रंग प्रक्रिया में विज्ञान और सिद्धांतों की उपयोगिता एवं उनका अभिनय अभ्यास में प्रायोगिक समर्थन करने की खोज में उत्सुक है। सौरभ देश भर के प्रसिद्ध कलाकारों के साथ लगातार कार्य कर रहे हैं। सौरभ, अनिरुध्द खुटवड के साथ 'ए रेज़िन इन दि सन' (2018), 'महापूर/रक्तपुष्प' (2019), 'लोअर डेप्थ्स' (2015) जैसे नाटकों में बतौर सह निर्देशक जुड़े रहे हैं।

Lighting Design

Sarthak Narula

Sarthak Narula did his masters in theatre from University of Mumbai in the year 2016 and a three-year diploma from National School of Drama with specialisation in design and direction in 2019. He has worked extensively in the field of theatre working under eminent Theatre Directors as an associate & designer like Abhilash Pillai, Amitesh Grover, Anuradha Kapur, Deepan Sivaraman, Neelam Man Singh & Roysten Abel to name a few. His recently designed and directed productions are 'Ruins in Reverse' (a devised performance based on the poems of a Punjabi poet Avtar Singh Sandhu performed at BRM 2020), 'Hiraeth' (Based on poetry of Resistance) & 'Adhantar' written by Jayant Pawar. He takes keen interest in site specific performances, scenographical interventions and making a performance experiential. He also completed an year long research fellowship on the technological advancements in the field of lighting in context to the alternative spaces of performance. He was recently associated with the following projects 'A doll's house' & 'The Money Opera' by Amitesh Grover, 'Havayadana' by Neelam Mann Singh, 'Weaving voices' by Roysten Abel and 'Dil-e-Nadan' by Salim Arif.

प्रकाश परिकल्पना

सार्थक नरूला

सार्थक नरूला ने वर्ष 2016 में मुंबई विश्वविद्यालय से रंगमंच में स्नातकोत्तर एवं 2019 में परिकल्पना और निर्देशन में विशेषज्ञता के साथ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से तीन साल का डिप्लोमा किया। अभिलाष पिल्लई, अमितेश ग्रोवर, अनुराधा कपूर, दीपन शिवरामन्, नीलम मान सिंह और रॉयस्टेन एबेल जैसे निर्देशकों के साथ सह निर्देशक और अभिकल्पक के रूप में कार्य किया। बतौर परिकल्पक और निर्देशक उनकी हाल ही में की गई प्रस्तुतियों में 'रुइन्स इन रिवर्स' (भारंगम 2020 में प्रस्तुत, पंजाबी कवि अवतार सिंह संधू की कविताओं पर आधारित एक युक्तिपरक प्रदर्शन), 'हिराएथ' (प्रतिरोध–कविता पर आधारित) और जयंत पवार द्वारा लिखित 'अधांतर' शामिल हैं। आप स्थल विशिष्ट प्रदर्शनों, सीनोग्राफ़िक प्रविष्टियों और प्रदर्शनों को अनुभवात्मक बनाने में गहरी रुचि लेते हैं। उन्होंने प्रदर्शन के वैकल्पिक स्थानों के संदर्भ में प्रकाश व्यवस्था के क्षेत्र में तकनीकी प्रगति पर एक साल की शोध फ़ेलोशिप भी पूरी की। आपने हाल ही में अमितेश ग्रोवर द्वारा निर्देशित 'ए डॉल्स हॉउस', और 'दि मनी ऑपेरा'; नीलम मान सिंह द्वारा निर्देशित 'हयवदन'; रॉयस्टेन एबेल द्वारा निर्देशित 'वीविंग वॉयसज़' और सलीम आरिफ़ द्वारा निर्देशित 'दिल–ए–नादान' नाटकों में बतौर परिकल्पक कार्य किया है।

Poster & Brochure Design

Vishala Ra Mahale

Vishala Ramachandra Mahale, graduated from National school of Drama, New Delhi, with specialization in Theatre Technique and Design in the year 2014. As an artist working in multidisciplinary, multilingual set up, he has worked / collaborated with various groups, performance makers, directors, visual artists and choreographers to create wide range of art works. At present he works as a freelance writer, content developer and designer.

पोस्टर और ब्रोशर–अभिकल्पना

विशाला रा महाले

विशाला रा महाले ने रंगमंच–तकनीक और अभिकल्पना में विशेषज्ञता के साथ, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली से स्नातक की उपाधि (2014) प्राप्त की। बहु–विषयक, बहुभाषी सेट–अप में काम करने वाले एक कलाकार के रूप में, उन्होंने कला कार्यों की एक विस्तृत श्रृंखला निर्माण के लिए विभिन्न रंग–समूहों, प्रस्तुति–निर्माताओं, निर्देशकों, दृश्य–कलाकारों और कोरियोग्राफ़रों के साथ काम किया है। वर्तमान में वे एक स्वतंत्र लेखक, कण्टेण्ट डेवलपर और अभिकल्पक के रूप में काम करते हैं।

On Stage

Damayanti :	Shivani Varma
Doctor :	Deepak Rao
Sona :	Ashwini Gorle
Barve :	Manoj Yadav
Mohini :	Mrinali Pandey
Agashe :	Puneet Nanda
Vrinda :	Anjali Negi
Bharat :	Rajkishore Sahoo
Jogdand :	Rajnish Kumar
Narendra :	Shekhar Kanwat
Malavika :	Zainab Ali Khan

Special thanks to -
Asif Ali Khan for
Poem Recitation - 'Jeevananubhav'

Pt. Sameer Dublay for Vocals
'Tame Toh Gavera Ke Poot Ganesh'
Malwa Folk Song

Saras Namdeo and P Melodi Dorcas

मंच पर

दमयंती : शिवानी वर्मा
डॉक्टर : दीपक राव
सोना : अश्विनी गोर्ले
बर्वे : मनोज यादव
मोहिनी : मृणाली पाण्डेय
आगाशे : पुनीत नंदा
वृंदा : अंजलि नेगी
भारत : राजकिशोर साहू
जोगदण्ड : रजनीश कुमार
नरेन्द्र : शेखर कांवत
मालविका : ज़ैनब अली ख़ान

विशेष आभार –
आसिफ अली ख़ान,
'जीवनानुभव' कविता पठन के लिए

पं. समीर दुबले,
गायन – 'तमे तो गवेरा के पूत गणेश'
मालवा लोक गीत

सरस नामदेव एवं पी. मेलडी डॉर्कस

Students - Acting Specialization

Shivani Varma

Deepak Rao

Ashwini Gorle

Manoj Yadav

Mrinali Pandey

Puneet Nanda

Anjali Negi

Rajkishore Sahoo

Students - Design & Direction Specialization

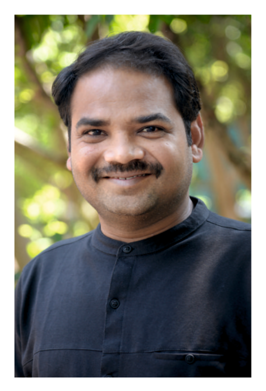
Rajnish Kumar

Shekhar Kanwat

Paski

Shruthi V

Zainab Ali Khan (Guest Artist)

Off Stage

Playwright:	**Mahesh Elkunchwar**
Costume Design :	Paski
Costume Design Guidance :	Nalini R Joshi
Set Design :	Shekhar Kanwat
Set Design Guidance :	Aniruddha Khutwad
Sound Design :	Shruthi V
Sound Design Guidance :	Sourav Poddar
Light Design :	Sarthak Narula
Poster & Brochure Design :	Vishala R Mahale
Set Props :	Shekhar Kanwat
Hand Props :	Paski
Make-Up :	Babbu Khan
Poem - 'Jeevananubhav' :	Rajnish Kumar
Aalap :	Insaf
Stage Management :	Manoj Yadav
Assistant Production Management :	Utpal Jha
Production Management :	Parag Sarmah
Assistant in Direction :	Rajnish Kumar
Associate in Direction :	Sourav Poddar
Design & Direction :	**Aniruddha Khutwad**

मंच परे

नाटककार :	**महेश एलकुंचवार**
वेशभूषा परिकल्पना :	पस्की
वेशभूषा परिकल्पना मार्गदर्शन :	नलिनी आर जोशी
दृश्यबंध परिकल्पना :	शेखर कांवत
दृश्यबंध परिकल्पना मार्गदर्शन :	अनिरुध्द खुटवड
ध्वनि परिकल्पना :	श्रुति वी
ध्वनि परिकल्पना मार्गदर्शन :	सौरभ पोद्दार
प्रकाश परिकल्पना :	सार्थक नरूला
पोस्टर एवं ब्रॉशर परिकल्पना :	विशाला रा महाले
मंच सामग्री :	शेखर कांवत
मंच वस्तु :	पस्की
रूप–सज्जा :	बब्बू ख़ान
कविता – 'जीवनानुभव' :	रजनीश कुमार
आलाप :	इंसाफ़
मंच प्रबंधन :	मनोज यादव
प्रस्तुति प्रबंधन सहायक :	उत्पल झा
प्रस्तुति प्रबंधन :	पराग सर्माह
निर्देशन सहायक :	रजनीश कुमार
सह निर्देशन :	सौरभ पोद्दार
परिकल्पना एवं निर्देशन :	**अनिरुध्द खुटवड**

Our sincere Thanks to -

- Production Department
- Set &
  Carpentry Department
- Costumes Department
- Lights Department
- Sound &
  Video Projection Department
- Photography &
  Video Documentation Department
- Property Department
- Library
- Bookshop
- Estate Department
- Student Mess &
  Canteen staff
- All the departments of
  NSD and staff members

विशेष आभार –

प्रस्तुति विभाग

मंच निष्पादन एवं कार्पेण्ट्री विभाग

वस्त्र सज्जा विभाग

प्रकाश विभाग

ध्वनि व वीडियो प्रोजेक्शन विभाग

फ़ोटोग्राफ़ी व वीडियो डॉक्यूमेंटेशन विभाग

मंच सामग्री विभाग

पुस्तकालय

बुक शॉप

सम्पदा विभाग

छात्र मैस एवं कैंटीन स्टाफ़

रा.ना.वि के समस्त विभाग एवं कर्मचारी

जीवनानुभव

जीवन को समझना है यदि, तो जाओ
जाओ उन देहातों में,
जहां हर साल आती है बाढ़,
कभी सूखा कभी अकाल

जाकर देखो उन किसानों को
जो अनाज उपजा कर भी
आसमान की चादर ओढ़
भूखे पेट सो जाते हैं,
देखो उन मज़दूरों को, जो हर रोज़,
ईंट से ईंट जोड़, कभी अपना घर नहीं बना पाते।

जीवन का संघर्ष समझना है,
तो जाओ उन आदिवासियों के बीच
जिनके जड़, जंगल, ज़मीन और संस्कृति को
लूटा जाता है हर रोज़

जीवन यथार्थ को गहरे उतर कर समझना है
तो उतरो उस धरातल पर
जहां हवा, पानी, आग, मिट्टी और आकाश
बांटे जाते हैं हर रोज़।

जहां संविधान के दीये तले
खुले आसमान के नीचे
इंसान को इंसान से पहले
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र बना दिया जाता है

जीवन गौरव को समझना है अगर
तो वहां जाओ, जहां हाथ में है झंडा
लहराते धनुष-बाण
किसी के हाथ में पैसों का खोखा
किसी के हाथ में पत्थर चमकदार

जीवन की मर्यादा को लांघ
बढ़ना चाहे आगे कोई, तो उसे सज़ा देने के लिए
भीड़ को पहले से दे रखे हैं सबक सिखाने के
नैतिकता बनाने के, अलिखित अपार अधिकार।
किसी आर्त के चुल्लू भर पानी मांगने पर
पेड़ पर रस्सी से बांध पिटवाया जाता है
सरेआम, या फिर
बेमेल से दिखने वाले प्रेमी जोड़ों को
जिंदा नोचा जाता है, आग में भुना जाता है, खुलेआम ॥

जीवन दर्शन के लिए
प्रभात बेला में,
सूरज निकले उसके पहले ही
सुला दिया जाता है, गोलियों से दाग किसी को,
या पत्थर से कुचल दिया जाता है,
किसी का सर
जीवन दर्शन के लिए,
झूठी बतला कर ॥

रजनीश कुमार

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
NATIONAL SCHOOL OF DRAMA
Bahawalpur House, Bhagwandas Road,
New Delhi - 110001